प्रातः क्लास 4-7-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

रूहानी बाप रूहानी बच्चों को बैठ समझाते हैं। तुम सितारे बैठे हो। बाप तो देखने में नहीं आते बाकी कौन चन्द्रमा और सितारे बच्चे। सभी हैं सजनियां। साजन तो देखने में नहीं आता। समझा जाता है। तो सभी स्टार्स ऐसे ही देखने में आते हैं जैसे ऊपर में हैं। कोई मां के सम्मुख अच्छा चमकते हैं कोई कम चमकते हैं। कोई कहां कोई कहां। तुम बैठे भी ऐसे हो। देखने में भी ऐसे ही आता है। कोई दूर-दूर होते चमकते हैं, कोई नजदीक में चमकते हैं। कोई कम चमकते हैं। इसलिए तुमको कहा जाता है ज्ञान सितारे। ज्ञान और योग में कोई बहुत तीखे होते हैं कम भी होते हैं। आत्माओं को भी देखा नहीं जाता, समझा जाता है। सभी सितारे नजदीक तो नहीं हैं। जो जास्ती चमकते हैं वह झट नजदीक में आते हैं। झट देखने में आ जाता है। बहुतों का कल्याण कल्याण करते हैं। उन पर बाप की नजर जाती है। हरेक खुद जानते हैं हम कहां तक सेवा करते हैं। यह हैईश्वरीय सेवा। ईश्वर जो बेहद का बाप है वह बैठ समझाते हैं। कैसे सेवा करनी चाहिए मनसा वाचा कर्मणा। मनसा सर्विस हुई सभी को शरीर अलग कराकर बाप को याद करना। मेरा तो एक बाप दूसरा न कोई। यह बहुत ही ऊंच बात है। भारत में ही यह अक्षर हैं। शिव बाबा आते भी भारत में हैं। कहते हैं मेरा तो एक दूसरा न कोई। अर्थात सिवाय एक बाप के और किसी को याद नहीं करते हैं। बाप भी बच्चों को बार2 समझाते हैं कि अपने को आत्मा समझो। आत्मा ही कहती है मेरा तो एक शिव बाबा दूसरा न कोई। भक्ति-मार्ग में तो अनेकों की याद आती है। यहां तुमको याद करना ही है एक को। दूसरा कोई याद न आये। उसका अर्थ भी अच्छी रीत समझना है। पिछाड़ी में जब शरीर छोड़ें तो कोई भी याद न आये। अपने शरीर तक। शरीर भी याद न आये। फिर बाकी तो कुछ रहा ही नहीं। कहते हैं ना आप मरे तो मर गई दुनिया। शरीर छोड़ा तो खलास। तो ऐसे तुम बच्चों को बाप को याद करना है। जो शरीर भी भासे नहीं। आत्मा तो अविनाशी है। अविनाशी बाप को याद करती है। एक बाप ही मित्र है बाकी सभी हैं दुश्मन। जैसे रावण दुश्मन है वैसे सभी दुश्मन हैं। शरीर भी दुश्मन है। दुश्मनों को (शरीरको) देखना नहीं है। सभी से मित्र एक बाप ही है। बाप को ही याद करना है। याद से ही आत्मा बिल्कुल पवित्र बन जाती है। जैसे सतोप्रधान होकर आये थे वैसे ही सतोप्रधान हो लौटना भी है। कहां भटकना न है। आत्मा को मंत्र लेकर जाना है। इसको कहा जाता है माया पर जीत पाने का मंत्र। बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझ पवित्र होकर भागना है। देह सहित देह के जो भी सम्बन्ध हैं इन सभी को भूलने का प्रयास करना चाहिए जरूर। अन्त तक कोई भी याद न आये। यही मेहनत है। भल कोई भी प्यारा से प्यारा होपरन्तु कोई भी याद न आये। सब से पहले प्यारा है अपना शरीर। फिर प्यारा होता है बाप या पति। यहदो सब से प्रिय होते हैं। बाप जिससे जन्म मिलता है और पति जिससे सारी जीवन पास होते हैं। यह बहुत ही लवली होते हैं। परन्तु उनको होते भी फिर भी परमात्मा को जरूर याद करना है। भक्ति-मार्ग में भी याद करते हैं परन्तु अधूरा। क्योंकि सच्चे से याद नहीं करते। क्यों याद करते हैं वह जानते ही नहीं। हे भगवान हे राम क्यों कहते किसको कहते कुछ भी पता नहीं। और यह भी अच्छी रीत कहते हैं बाबा आप जब आवेंगे तो जरूर एक सपोर्ट करते हैं। बाबा आप आवेंगे तो हम आप के ही बनेंगे। और कोई का नहीं। यह मालूम नहीं है कि बाप की याद से ही पाप भस्म होंगे। यह और कोई समझा न सके। बाप ही अभी समझाते हैं। वह है पुण्यात्माओं की दुनिया। वहां पाप होता नहीं। यह है पापात्माओं की दुनिया। यहां पुण्यात्मा एक भी नहीं होता। पुण्यात्मा, पापात्मा कहा जाता है। पुण्य परमात्मा नहीं कहा जाता। तुम बच्चे जानते हो सतयुग अथवा स्वर्ग है पुण्यात्माओं की दुनिया। नर्क है पापात्माओं की दुनिया। रावण राज्य में एक भी मनुष्यपुण्यात्मा हो न सके। पुण्यात्माओं की दुनिया है ही स्वर्ग। पापात्मा से पुण्यात्मा कब बनते हैं कलियुग में तो है पापात्मायें। सतयुग में होते हैं पुण्यात्मायें। तो जब पुरुषार्थ कराने वाला आवे तब ही हम पुण्य-आत्मा बनें। बाप न पुण्यात्माओं की दुनिया में, न पापात्माओं की दुनिया में आते हैं। वह आते ही हैं पुरुषार्थ

संगम युगे। बाप आकर पूण्यात्मा बनाते हैं। जब नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार पूण्यात्मा बन जाते हैं तब बाप पापात्माओं की दुनिया खत्म करते हैं। पूण्यात्माओं की दुनिया की स्थापना होती है। इसको कहा जाता है नई दुनिया। अभी तुम पुरूषार्थी हो। इस समय ही तुम बाप को याद करते हो। तुम जानते हो बाप आते ही हैं पुरूषोत्तम संगम युग पर। सभी उनको याद करते हैं क्योंकि दुखी हैं। आपदाएं खड़ी हैं याद भी पापात्माएं ही करती हैं। पूण्यात्माओं को तो बाप को याद करने की दरकार ही नहीं। यह है पापात्माओं की दुनिया। तुम पुरूषार्थ कर रहे हो पूण्यात्माओं की दुनिया में जाने का। बाप कहते हैं तुमने जो इन्जाम किया है वह तो पूरा रखना चाहिए ना। तुम ने क्या कहा है बाबा आप आवेंगे तो हम आप पर ही वारी जाउंगी। मेरा तो एक आप। दूसरा न कोई। यह किसने कहा? आत्मा ने। अभी यह वचन जो बाप को दिया है उनको निभाना है। एक बाप को ही याद करो। हां उसमें टाईम तो लगेगा। एकदम पूण्यात्मा कोई बन जावे यह तो हो नहीं सकता। नम्बर वन से लेकर 84 जन्म लिये हैं। तो पूरी कला कम होती जाती है। 84 जन्मों का ही यह चक्र है। हरेक जन्म में थोड़ा कम होता जाता है। 84 जन्मों का ही चक्र है। हरेक जन्म में थोड़ा2 कम होता जाता है। 84 जन्मों में बाप को जानते ही नहीं हैं। सुख मिला और बाप को भूले। फिर हरेक जन्म में कुछ न कुछ डिग्री कम होती जाती है। वहां एकदम पवित्र रहते हैं। फिर प्युरिटी, पीस-प्रास्पर्टी में कुछ न कुछ कम होती जाती है। फिर जब रावण राज्य होता है तो जल्दी2 उतरते हैं। पापात्माएं बहुत हो जाते हैं। सब से कड़ा पाप है बाप को सर्वव्यापी कहना। देह-अभिमानी बन जाते हैं। गिरते2 अभी आकर 84 जन्म पूरे हुये हैं। अभी तुम बच्चों का बुधि में बैठा है हम 84 का चक्र कैसे खाते हैं। 84 के बाद में फिर पहला नम्बर शुरू होता है। वहां हम पवित्र रहते हैं। अभी यह सारा ज्ञान हरेक बच्चे की बुधि में रहता है। कितना सहज है। हम 84 का चक्र कैसे लगाते हैं बुधि में बैठ गया है। स्टुडन्ट की बुधि में है तब तो सुमिरण करते हैं। नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार। सम्पूर्ण बनने में तो देरी है। इसलिए जो कमजोर है उनका काम है दौड़ी पहनना। रेस करो। बाप को याद करते रहना है। तुम्हारा यह है प्रवृति मार्ग। सन्यासियों का निवृति मार्ग अलग है। वह अकेले ब्रह्मतत्व तरफ दौड़ते हैं। बाप को तो जानते ही नहीं। वह अपने घर जा नहीं सकते हैं। घर में तो रहना होता है। वह समझते हैं हम ब्रह्म में लीन हो जाते हैं। यह है अनराईटियस ख्यालात। आत्मा को अनराईटियस झूठा ज्ञान मिलता है। वापस तो कोई जा नहीं सकते। घर जाने का रास्ता बाप ही बताते हैं। जब घर जाये तब फिर आये नई दु0 में। बच्चों को समझाया सभी को ऊपर से नीचे आना है। पार्ट बजाने। घर को खाली होना है। लास्ट में आते हैं बाप। भल मनुष्यों को बुधि होती जाती है। बाप कहते हैं वह क्या है, बाकी बचे-खुचे छोटे2 टार-टारियां आद होंगे। उनके भी पहले शोभा तो है ना। नये2 मठ-पंथ निकलते हैं जिनका मान बहुत है। पुराने पत्ते तो जैसे की सड़े हुये हैं। तुम्हारा तो कुछ भी मान नहीं है। क्योंकि सूखे पड़े हो। नये2 डारियां-टारियां आद जो स्थापन होते हैं वह शोभते हैं। तुम अभी पुराने हो गये हो। तुम्हारा जरा भी मान नहीं। नये2 का मान होता है इसलिए उन्हों के पास ही सभी जाते हैं। अभी तुम समझते हो सब से पुराने हैं देवतायें। नये2 जो आते हैं वह बहुत चमकते हैं। उनकी लाईफ ही थोड़ी है। वह आयु पास कर के आये हैं। जो पीछे आने वाले हैं उनका भी पार्ट पूरा हुआ फिर घर चले जावेंगे। बाप सभी को घर ले जावेंगे। वह है घर। जहां हम आत्मायें विगड़ शरीर रहती हैं। वहां नंगे ही रहते हैं। नंगा अक्षर से वह फिर नागे बन गये हैं। कहेंगे नंगे आये थे फिर नंगे ही जाना है। उनको यह ज्ञान नहीं है कि पुनर्जन्म तो जरूर लेना ही है। नंगा बनना इसको नहीं कहा जाता। अभी तुम बच्चे समझते हो वहां शरीर भी कपड़े नहीं होते हैं। फिर यहां शरीर में आते हैं पार्ट बजाने। बाकी शरीर को ढकने के लिए कपड़ा तो जरूर चाहिए। मनुष्य समझते नहीं हैं। नांगों को बहुत मान देते हैं। मनुष्य समझते हैं यह बहुत ऊंच है। शरीर की भी प्रवाह नहीं रखते। सतयुग में तो ऐसे कोई नंगे होते ही नहीं। यह तो यह सभी बातें बाप ही आकर समझाते हैं तुम बच्चों को। जो अच्छी रीत समझ जाते हैं उनको ही कहेंगे ज्ञानी

तू आत्मा। वह है भक्ति तू आत्मा। भक्ति करते रहते। बाप को ज्ञानी आत्मा ही प्रिय लगते हैं। वह एक बाप को ही याद करते हैं। ज्ञान बिगड़ तो कोई यहां आ न सके। बाप का भी ज्ञान मिलता है। बाप को याद कर वरसा लेते हैं। ज्ञानी तू आत्मा भी सभी एक जैसे नहीं होते। कोई ज्ञान में अच्छे होते हैं योग में कम होते हैं। कोई योग में अच्छे होते हैं ज्ञान में कम होते हैं। ऐसे ही देखने में आता है। विवेक भी कहते हैं ऐसे होने का है। भल पहले भी बाप समझ सकते हैं यह राजधानी स्थापन हो रही है। इसमें जरूर सभी होंगे। प्यारे तो बहुत लगते हैं जो इन बिगड़ दूसरा कोई को देखने दिल नहीं होती है। कोई वह ज्ञानी तू आत्मा तो नहीं हैं। यह कहां भी जावेंगे तो उनको बच्चे ही याद रहेंगे। बच्चों को ही देखना है। बच्चे ही वृधि को पाते रहते हैं। वह आत्मायें मुझे बहुत ही प्रिय लगती हैं। कि हम बाहर क्यों जावें ही क्यों। दिल ही नहीं होती मुझे सिवाय अपने ज्ञानी तू आत्मा बच्चों के अच्छा नहीं लगता है। रौरव नर्क में सभी गोते खाते रहते हैं। जैसे है मनुष्य वैसे हैं जनावर। मनुष्य में भी दिखाते हैं जनावर बिच्छू टिण्डन सर्प आद दिखलाते हैं। है तो सभी मनुष्य परन्तु चलन ऐसी है बात मत पूछो। एक दो को डंसते रहते हैं। आधा पोना तो क्या बाकी जो भी टाईम है दुःख में ही रहते हैं। बाबा के पास तो बहुत ही आते हैं आकर के दुःख का वर्णन करते हैं। बहुत रोते हैं। अच्छे बड़े घर लखपतियों की स्त्रीयां भी बड़ी दुःखी होती है। बात मत पूछो। पिछाड़ी है ना। लखपति हो या कोई भी हो दुःखी तो सभी है ना। अभी उन्हों को पता नहीं पड़ता है। आगे चलकर मालूम पड़ेगा। विनाश के समय क्या होगा। फिर कहेंगे इतनी मेहनत की, कारखाने लगाई यह सभी मिट्टी में मिल रहा है। आगे चल तुम देखना। तब मजा होगा बाकी थोड़ा टाईम रहेगा फिर देखना क्या करते हैं। धन-दौलत आद सब कहां छिपावेंगे। अनायास ही सब खत्म हो जावेंगे। वह भी खत्म होंगे तुम भी खत्म होंगे। जाना तो सभी को है ना। परन्तु वह गंवा कर जाते हैं, तुम साथ में ले जाते हो। वह गरीब बन जाते हैं, तुम शाहुकार बन जाते हो। तुम हो ज्ञानी तू आत्मा। वह है भक्त। तुम बच्चे ही प्रिय लगते हो। जो प्रिय होते हैं उनको ही वरसा मिलना है। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। विश्व का मालिक बनाने लिए मैं आता हूं। बच्चे भी जानते हैं। तो ऐसे बाप को इतना प्यार से याद भी करना चाहिए ना। तुम बच्चों को लिख देना चाहिए विश्व में पवित्रता सुख शान्ति की स्थापना हो रही है। अर्थात नई दुनिया की स्थापना हो रही है। तुम्हारे पास आकर समझेंगे। यहां तो कल्प पहले स्वर्ग के मालिक बने थे। बाकी और तो कोई सुनेंगे भी नहीं। जो मालिक बनने वाले होंगे। उन्हों का ताला खुलेगा जाकर सुनने के लिए। थोड़ा2 ताला खुलता ही जाता है। कोई का ताला बिल्कुल खुलता ही नहीं कितना भी माथा मारो। जैसे कि बिल्कुल ही पत्थर बुधि हैं। तुम्हारा कुछ न कुछ ताला खुला है नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। कोई को अच्छा लग जाता है तो बस समझते हैं यह तो बहुत सहज है। बाप को याद कर विश्व का मालिक बनना है। भक्ति मार्ग में भी याद किया है ना। सभी सुनती है आत्मा। आत्मा में ही नालेज आती है जिससे दर्जा ऊंच पाते हैं। बाकी और कोई फर्क आत्मा में देखने में आता है क्या। आत्मा में जो ज्ञान है वह आत्मा ही जानती है। जैसे बाप सृष्टि के आदि मध्य अन्त को जानते हैं तुम बच्चे भी जानते हो। तुम अभी नालेजफुल बनते जाते हो। जैसे आर्डीनरी टीचर पढ़ाते हैं वैसे बाप भी बच्चों को पढ़ाते हैं। फर्क है ना। नालेज आत्मा में धारण होती है। वह पवित्र होती जाती है। बाकी शरीर में तो दूसरा कोई चमक नहीं आवेगी। आत्मा में ज्ञान है तो वह हर्षित खुश खुशी में रहती है। वह भी किसका सदैव कायम नहीं रहता। बिमारियां आद बहुत होती है। यह है दुःख की दुनिया। तुम बच्चे जानते हो हम भविष्य 21 जन्म सदैव ही हर्षित रहेंगे। वहां दुःख की कोई बात नहीं सुनेंगे। दुःख किसको कहा जाता है वह तुम वहां जानते ही नहीं हो। यहां दुःख दोनों को जानते हो। याद भी नहीं रहेगा कि हम फिर ऐसे दुख में जावेंगे। यह भी अभी तुम जानते हो। वह तो समझते हैं कलियुग अजन्म 40000 वर्ष पड़ी है। इसलिए तुम कहते हो वह अज्ञान नींद में सोये पड़े हैं। शास्त्रों के कारण यह हालत हुई है। जिन शास्त्रों को फिर गाड़ी में बिठाय परिक्रमा दिलाते हैं।

अभी तुम समझते हो इन भक्ति मार्ग के शास्त्रों सेवा प्राप्ती हुई है। जैसे शास्त्र गिरे हुये हैं खुद भी गिरे हुये हैं। गिरे हुये गिरे हुये चीज को ही परिक्रमा दिलाते हैं। कोई जरूर निकलेगा जो इस कुल के होंगे। उनको दिल से लगेगा। यह ब्रह्माकुमारियां तो ठीक कहती हैं। वह समझते हैं शास्त्रों का ही बहुत ऊंचा ज्ञान है। वह ही सदगति को प्राप्त कराती है। अभी तुम बच्चे समझते हो सदगति दाता तो एक ही बाप है। परमपिता परमात्मा ही आकर ज्ञानी तू आत्मा बनाते हैं। तुम अभी आस्तिक भी बने हो। आस्तिक कुमार। शिव बाबा के बच्चे हो ना। सभी आत्माएं शिव कुमार हैं। सभी को कहेंगे शिवकुमार। ब्रदर्स है ना। सभी भाईयों का बाप एक है। शिवकुमार है तो कुमारों को अर्थात बच्चों को शिव बाबा से राज-भाग मिलता है स्वर्ग का। बुधि में कहती है कि राजाई में तो प्रजा आद भी होंगे ना। यहराजाई स्थापन हो रही है। सभी श्रीमत पर पुरुषार्थ करते हैं स्वर्ग का वरसा पाने। फिर उसमें कोई जाती पढ़ते हैं कोई कम पढ़ते हैं। कोई अच्छी रीत याद करते हैं कोई नहीं करते हैं। मेहनत है। इन ल०ना० को देखकर सभी खुश होते हैं तुम भी खुश होते हो। समझते हो हम नर से ना० नारी से ल० बनते हैं। तो ऐसा पुरुषार्थ भी करना चाहिए ना। यह भी समझते हैं सभी तो नहीं स्वर्गवासी बनेंगे। स्वर्गवासी तो जरूर बनेंगे। स्वर्गवासी बनना चाहते हैं, परन्तु स्वर्ग में भी क्या बनना चाहते हैं वह नहीं कहते। बस सिर्फ कहते हैं फलाना स्वर्ग पधारा। तो खुश होनी चाहिए ना। वहां तो दुःख का नाम-निशान भी नहीं रहता। तुम हर 5000 वर्ष बादआधा कल्प सुख भोगते हो। वहां धन-माल बहुत रहता है। विचार करो भारतमें कितना अकीचार धन था। बहुत2 धन था। भक्ति मार्ग में भी कितनी राजाई होती है। सभी राजाओं पास मंदिर होते हैं। अच्छे राजा के पास जरूर अच्छा ही मंदिर होगा। अभी तक भी ल०ना० के मंदिर बनाते रहते हैं। परन्तु उनको कुछ भी पता नहीं है। आगे चल देखेंगे अभी तो मौत सामने आ रहा है। फिर मंदिर आद बनाना छोड़ देंगे। मंदिरों में देवताओं के चित्र हैं। उनका दर्शन करने जाते हैं बन्दर। सतयुग में तो न मंदिर है न बन्दर हैं। यहां हिसाब पूरा है। बन्दर जाते हैं मंदिरों में। खुद देवताओं के आगे जाकर कहते हैं आप सर्वगुण सम्पन्न ... हम पापी नीच काभी कुले हैं। तो बन्दर ठहरे ना। यह भी अभी तुम बच्चों को पता पड़ा है। मंदिरों में बन्दर ही जाते हैं। तुम ने अभी मंदिरों में जाना छोड़ दिया है। तुम तो अभी यह बनने का पुरुषार्थ कर रहे हो। कहते हो बाबा आप से स्वर्ग का वरसा लेने आये हो। क्या से क्या बनते हैं। अभी तुम जाकर सुनाओ2 कहते हैं बन्दर लोग। सूरत मनुष्य की है परन्तु सीरत बन्दर की है। अभी तुम्हारी सीरत देवी बन रही है। फिर सूरत भी बदल जावेगी। देवता बन जावेंगे।

तो बाप समझाते हैं देवी गुण धारण करो। तुम कहां भी मंदिरों आद में जाओ तो तुमको वहां दर बहुत मिलेंगे। मेरे भक्त हैं या देवताएं के भक्त हैं, वहां सर्विस करने जाओ। उनको समझाओ तुम यह पुरुषार्थ कर मंदिर लायक बन सकते हो। सिर्फ बाप को याद करो तो तुम मंदिर लायक बनशिवालय में चले जावेंगे। जितना बहुतों का सर्विस करेंगे उतना ही ऊंच पद पावेंगे। बच्चों को बहुत खुशी होना चाहिए ना। वह है भक्त तू आत्मा। तुम हो ज्ञानी तू आत्मा। बाप मिला है तो तुम ने भक्ति छोड़ दी। ज्ञानी तू आत्मा बने हो। वह सभी है भक्त तू आत्मा। आत्मा तो सभी है। वह आत्माएं भक्ति करती हैं तुम आत्माएं ज्ञान सुनती हो। बाप को बच्चे ही बहुत प्रिय लगते हैं। जो ज्ञानी तू आत्मा है। बाकी तो बन्दर मिशल है। अच्छा मीठे2 बच्चों को बाप व दादा का याद प्यारगुडमार्निंग और नमस्ते।

हलो मधु प्राणों अभी आबू कोप्रदर्शनी तो पूरी हुई। तो मधुबन को रिम-झिम भी हल्की ही हो गई है। फिर भी कोई आते, कोई जाते ही रहते हैं। बापदादा की ज्ञान बरसातों से परिपूर्णहोकर अर्थात आत्मा में वह बल भरकर, विश्व के मालिकपने का नशा लेकर जाते हैं। ज्ञान बरसात के साथ2 स्थूल बरसात भी शुरू हो गई है। दोनो बरसातों के संगम का सुहाना समय का वहार लूट रहे हैं। यह सौभाग्य प्राप्त करने भला किसका दिल न ललचता होगा। ऐसे बापदादा के मधुर महावाक्य जैसे कि दिल में तीर के समान चुभते हैं। दिल तो कहती है ऐसे बाप दादा का साथ तो कभी छूटे ही नहीं। इसके आगे सतयुग के सुख भी फीके पड़ जाते हैं। इस पर कर कुछ नहीं सकते। भावी। अच्छा अभी विदाई।